लुप्तप्राय जनजातियों के लोग कार्यक्रम में शामिल होंगे

32 जनजातियों को एक मंच पर लाएगा सीयूजे

रांची | प्रमुख संवाददाता

केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखंड (सीयूजे) ने अपनी स्थापना का एक दशक पूरा कर लिया है। इसके मद्देनजर विश्वविद्यालय कई पहल करने जा रहा है। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के लुप्तप्राय भाषा केंद्र (सेंटर फॉर एंडेंजर लैंग्वेजेज) की ओर से बिरसा मुंडा लैंग्वेज एंड कल्चर फेस्टिवल का आयोजन किया जा रहा है। यह अपनी तरह का पहला आयोजन होगा, जिसमें झारखंड की सभी 32 जनजातियां एक मंच पर जुटेंगी। विशेष रूप से लुप्तप्राय जनजातियों के लोग इसमें अपने समुदाय का प्रतिनिधित्व करेंगे। यह तीन दिवसीय महोत्सव 11-13 मार्च तक होगा।

कई आकर्षण होंगेः महोत्सव में आदिम जनजातीय समुदाय की कला, संस्कृति, खानपान, वेशभूषा व साहित्य से जुड़े कई आकर्षण होंगे। तीन दिवसीय आयोजन में हर जनजातीय समुदाय के लोग अपनी परंपरागत कला का प्रदर्शन करेंगे। असुर जनजाति के लोग- लोहा, बिरजिया जनजाति के लोग बांस की टोकरी बनाने की कला प्रदर्शित करेंगे। विद्यार्थियों के लिए आदिम जनजाति विषय पर चित्रांकन और निबंध प्रतियोगिता होगी।

इसके अलावा हर जनजाति के लोग अपने-अपने समुदाय विशेष की सांस्कृतिक प्रस्तुति देंगे। आदिवासी समुदाय में प्रचलित खानपान भी महोत्सव का मुख्य आकर्षण होगा। इसके अलावा जनजातीय भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकों व आदिवासी लेखकों की किताबों की भी प्रदर्शनी लगाई जाएगी। साथ ही, जनजातीय विषय पर आधारित वृत्तचित्र का भी प्रदर्शन किया जाएगा।

नई पहल

- हर जनजातीय समुदाय के लोग अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे
- आदिम जनजाति विषय पर आयोजित होंगी प्रतियोगिताएं

11 से 13 मार्च तक विश्वविद्यालय परिसर में चलेगा महोत्सव

हर समुदाय के लोग अपनी भाषा-संस्कृति पर बोलेंगे

विश्वविद्यालय के लुप्तप्राय भाषा केंद्र के समन्वयक डॉ तुलसीदास मांझी ने बताया महोत्सव में जनजातीय साहित्य सम्मेलन भी होगा, जिसमें हर समुदाय के लोग अपनी भाषा-संस्कृति पर बोलेंगे। साथ ही, झारखंड में आदिवासी भाषा साहित्य के क्षेत्र में अच्छा काम करनेवालों को सम्मानित किया जाएगा। इस सम्मेलन में झारखंड की सभी जनजातियों के अलावा छत्तीसगढ़, ओडिशा, आंध्रप्रदेश आदि जनजातीय समुदाय के लोगों को भी आमंत्रित किया गया है। कुलपति प्रो नंद कुमार यादव ह्यइंदुद्ध की देखरेख में महोत्सव की तैयारियां चल रही हैं। महोत्सव को कल्याण कार्य से भी जोड़ा गया है। इसके तहत विश्वविद्यालय की ओर से निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया है। साथ ही, आदिवासी बच्चों के बीच स्कूल बैग का वितरण किया जाएगा।